जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्ध्य च
जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांवैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्ग मनोहरम् ।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः ।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 23 | लक्ष्मणगढ़ 16सितम्बर,1 अक्टूबर 2021(संयुक्तांक) | मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/-

आराध्य को मिला नया स्वरूप लक्ष्मणगढ़, रघुनाथजी के मन्दिर का 90 साल बाद जीर्णोद्धार

विरासत को नया स्वरूप देने वाले कारीगरों का सम्मान

लक्ष्मणगढ़ नगर आराध्य देव रघुनाथजी के मन्दिर (बड़ा मन्दिर) के स्वरूप को निखारने का काम बुधवार को पूरा हो गया। प्रवासी भामाशाहों के आर्थिक सहयोग से नौ दशक बाद इस मन्दिर के जीर्णोद्धार छह माह पहले शुरू किया गया था। बुधवार को काम पूरा होने पर कस्बेवासियों ने गुरुवार को मुख्य चित्रकार व कारीगर प्यारेलाल नायक का सम्मान किया।

प्रवासी भामाशाह श्रीकुमार खमंदिर महंत अशोकदासजी महाराज ने साफा व मोतियों की माला पहनाई। इस मौके पर बगड़िया स्कूल के सचिव पवन गोयनका, वरिष्ठ पार्षद पवन बुटोलिया, भाजपा बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के जिला संयोजक शशिप्रकाश जोशी, पुरुषोत्तम त्रिवेदी, परमेश्वर शर्मा, पार्षद विष्णु शर्मा, दीपक शर्मा अंकुर गोयनका आदि मौजूद थे।

मूल स्वरूप कायम रख किया नवीनीकरण

मन्दिर के जीर्णोद्धार के दौरान इसके मूल स्वरूप को कायम रखते हुए मरम्मत व नवीनीकरण का कार्य किया गया है। कारीगरों ने मन्दिर की दीवारों पर अंकित भित्ति चित्रों तथा मुख्य द्वार पर बने चित्रों का पुनः चित्रांकन उनके मूल स्वरूप के अनुसार ही किया। मंदिर को नया स्वरूप प्रदान करने में प्रवासी भामाशाह श्रीकुमार लखोटिया तथा बाबूलाल काबरा ने करीब 20 लाख का सहयोग दिया।

लखोटिया ने बताया नवम्बर में मंदिर का भव्य लोकार्पण किया जाएगा।रावराजा ने करवाया था निर्माण मंदिर महंत अशोकदास महाराज ने बताया कि बालनन्दाचार्य के लश्करी वैष्णव संप्रदाय के इस प्राचीन मन्दिर की नींव लक्ष्मणगढ़ के संस्थापक रावराजा लक्ष्मणसिंह ने वि.सं. 1862 ईस्वी सन 1805 में दुर्ग की नींव रखने से पूर्व रखी थी। स्थापना के बाद 1931 में जनसहयोग से इस मन्दिर का प्रथम बार जीर्णोद्धार हुआ था। अब पत्रिका के विरासत संरक्षण अभियान की प्रेरणा से जीर्णोद्धार कार्य करवाया गया।

लक्ष्मणगढ़ में होगी राष्ट्रीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता

भामाशाह सोमाणी का बास्केटबॉल खिलाड़ियों ने किया अभिनंदन लक्ष्मणगढ़ प्रवासी उद्योगपति व भामाशाह दिनेश सोमाणी का मंगलवार को बास्केटबॉल अभिनंदन किया गया। रघुनाथ -बालिका स्कूल में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था सचिव ओमप्रकाश जागिड़ ने की।

खिलाड़ियों की ओर से नागरिक मौके पर भामाशाह ने कहा कि इस मौके पर सोमाणी ने कहा कि जीवन में सिर्फपैसा कमाना ही हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें यह ध्यान रखना चाहिए की कमाए गए पैसे को हम समाज व राष्ट्र के लिए किस प्रकार दान कर सके। उन्होंने बालिकाओं को प्रोत्साहन करने पर जोर देते हुए कहा कि उनकी जहां भी जरूरत होगी वे हर समय तैयार मिलेंगे। भामाशाह ने लक्ष्मणगढ़ में राष्ट्रीय स्तर की बास्केटबाल प्रतियोगिता करवाने की घोषणा की।

मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर 26 को

लक्ष्मणगढ़. सरकारी अस्पताल रोड़ स्थित महावीर जांगिड़ भवन में रोटरी क्लब व वैश्य महासम्मेलन के संयुक्त तत्वाधान में रविवार को निशुल्क मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर लगाया जाएगा। शिविर संयोजक विष्णू भूत व संदीप बजाज ने बताया कि शिविर में कैंसर,स्त्री रोगों, मूत्र रोग, दंत रोग, अस्थि रोग, चर्मरोग, नेत्र रोग, शिशु रोग,नाक, कान व गला रोग सहित विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ चिकित्सक मरीजों की जांच कर परामर्श देंगें ।

स्टेशन रोड़ स्थित जांगिड़ भवन में भी रविवार को निशुल्क चिकित्सा एवं परामर्श शिविर लगाया जाएगा। राधेश्याम मांडण ने बताया कि महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर व श्री विश्वकर्मा कल्याण समिति सीकर के संयुक्त तत्वावधान में लगने वाले शिविर में मधुमेह एवं फि जिशियन, जनरल सर्जरी, हड्डी रोग, कान, नाक व गला, प्रसूति व स्त्री रोग, नेत्र रोग, फिजियोथेरेपी, ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर व ईसीजी की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। शिविर में हड्डी व जोड प्रत्यारोपण तथा स्पोर्ट्स एन्जरी रोग विशेषज्ञ डॉ रजत जांगिड़ की सेवाएं मिलेगी।

चिकित्सा शिविर में 170 लाभान्वित

लक्ष्मणगढ़ डालमिया सेवा ट्रस्ट और भारतीय सेवा समाज की ओर से खूड़ी गांव में निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया। ठाकुर विक्रम सिंह व रतन कंवर की स्मृति में राजकीय आयुर्वेद औषधालय में आयोजित शिविर में 170 ग्रामीण लाभान्वित हुए। शिविर में दमा, गठिया, जोड़ों का दर्द, मधुमेह, लिवर, पथरी, खाँसी, बुखार सहित अन्य बीमारियों के रोगियों की जांच कर परामर्श दिया गया। शिविर में डॉ जोगेन्द्र सिंह की टीम ने सेवाएं दी।

इससे पहले पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष प्रह्लाद सिंह खुड़ी, पूर्व सरपंच नरेश मंडीवाल, आयुर्वेद चिकित्सक डॉ रमेश कस्वां, सुरेंद्र फगेड़िया, वैद्यराधेश्याम शास्त्री व ओमपाल सिंह शेखावत ने शिविर का शुभारंभ किया। अभिमन्यु सिंह शेखावत ने आभार जताया।

पीएम मोदी ने की सराहना: 15,600 फीट ऊंची पोस्ट तक पहुंचे सीकर के शारीरिक शिक्षक महेश नेहरा दिव्यांग ने एक हाथ से फतह की सियाचिन की ऊंची चोटी

सीकर. दिव्य क्षमता की बात कहते हुए निशक्तों को 2016 में दिव्यांग संबोधन दिए जाने के

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फैसले को जिले के सरकारी स्कूल के दिव्यांग शारीरिक शिक्षक ने सार्थक साबित कर दिखाया है।

लक्ष्मणगढ़ के राउमावि काछवा के एक हाथ विहीन शारीरिक शिक्षक महेश नेहरा ने आठ सदस्यीय दिव्यांग दल के साथ सियाचिन ग्लेशियर पर 15,600 फीट ऊंची कुमार पोस्ट की चढ़ाई कर नया विश्व रेकॉर्ड बनाया है।

जिसका • जिक्र खुद प्रधानमंत्री मोदी ने • रविवार को प्रसारित मन की बात में महेश नेहरा का नाम लेते हुए किया। उन्होंने इसे ऐतिहासिक, अभूतपूर्व व देश के लिए प्रेरक ऑपरेशन बताया।

आठ दिन में पूरा किया मिशन, नेत्रहीन को दिया सहारा

सियाचीन मिशन को 15 अगस्त को सामाजिक न्याय मंत्री वीरेन्द्र कुमार ने हरी झंडी दिखाई थी।प्रशिक्षण व स्वास्थ्य परीक्षण के बाद क्लो संस्थान के सौजन्य व पैरा कमांडो फोर्स के सहयोग से नेहरा के आठ सदस्यीय दिव्यांग दल ने 70 किमी की बर्फीली पहाड़ी की यात्रा आठ दिन में पूरी की। जिसमें पांच दिन चढ़ने व तीन दिन लौटने में लगे ।

दल में एक हाथ से निशक्त महेश नेहरा के अलावा चार नेत्रहीन, एक पैर व दो अन्य भी हाथ से निशक्त थे। इनमें से नेहरा एक नेत्रहीन सदस्य लोकचांग के मार्गदर्शक भी रहे।

सीढ़ियां लगाकर पार की नदियां, दो बार कम हुई ऑक्सीजन

बकौल नेहरा मिशन रोचक होने के साथ बेहद खतरनाक था। ग्लेशियर पर माइनस 15 डिग्री का तापमान था। बर्फ के पहाड़ों पर बने 100-100 फीट गड्ढों की वजह से बार- बार रास्ता बदलना

पड़ रहा था। बीच बीच में तेज बहाव वाली नदियां थी। जिन्हें सीढ़ियां बिछाकर उन पर पत्थर रखते हुए पार करना पड़ा। ऊंचाई पर चढ़ने के साथ ऑक्सीजन की सि कमी भी सताने लगी। चढ़ाई के टि अंतिम दो दिन तो ऑक्सीजन का स्तर कम होने से उनके सहित कई सदस्यों की तबीयत बिगड़ गई। उन्हें मेडिकल टीम का सहयोग लेना पड़ा।

मजदूरी करते कटा था हाथ, एशियन गेम्स तक बनाई पहचान

मौल्यासी निवासी महेश नेहरा का किशोरावस्था में एक मिल में करते समय मशीन में हाथ आने पर चिकित्सकों को पूरा हाथ काटना पड़ा था। इसके बाद भी निराश नहीं होकर नेहरा ने पढ़ाई के साथ एथेलेटिक्स में रुचि ली और 2010 में चाइना में एशियन में गेम्स तक पहुंच बनाई।

सम्पादकीय

“ सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् ”

अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गरू शंकराचार्य

स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज का 98 वें अवतरण दिवस पर पावन सन्देश

अन्धानुकरण छोड़कर विवेकरूपी नेत्र खोलें जिस प्रकार सुखी जीवन के लिए शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन की सार्थकता के लिए भी सभी अनर्थों के मूल मोह को दूर करना आवश्यक है। मोह को समस्त मानसिक व्याधियों का मूल माना गया है। मोहाक्रांत व्यक्ति स्वयं अपना मार्ग नहीं चुन पाते फलत: अन्धानुकरण में पड़ जाते हैं। इस मोह को दूर करने का सर्वोत्तम उपाय विवेक है। मानस में रामकथा का महत्व बतलाते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है

रामकथा कलि पन्नग भरनी। पुनि विवेक पावक कँह अरनी।

यहाँ विवेक को पावक अर्थात् अग्नि माना गया है। सत्संग का महत्व बतलाते हुए कहा गया -

बिनु सत्संग विवेक न होई। रामकथा बिनु सुलभ न सोई। विवेक का अर्थ होता है दो सम्मिलित वस्तुओं को पृथक् करके देखना। जैसे नीर और क्षीर का विवेक होता है। हंस के सम्बन्ध में प्रसिद्धि है कि यदि जल और दूध को मिलाकर हंस के सामने रख दिया जाए, तो हंस दूध पी लेता है और जल छोड़ देता है। इसी प्रकार विवेकी पुरुष संसार में असार का त्याग करके सार ग्रहण कर लेता है। यदि विवेक प्राप्त हो जाए तो मोह का समूल उन्मूलन किया जा सकता है। प्राय: संसार के लोग एक दूसरे का अन्धानुकरण करते देखे जाते हैं, किन्तु विवेकी अन्धानुकरण छोड़कर अपने जीवन को विवेक के द्वारा सार्थक करता है। सांख्यशास्त्र के अनुसार प्रकृति-पुरुष का विवेकाग्रह ही उसके बंधन का कारण माना जाता है। पुरुष निर्विकार होते हुए भी प्रकृति के गुणों के साथ स्वयं को जोड़कर बंधन में पड़ता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से रामायण की व्याख्या करते हुए विद्वान् कहते हैं - आत्मारूपी राम की शांतिरूपी सीता को मोहरूपी रावण अविद्यारूपी लंका में ले जाकर रख लेता है। शांति सीता की सुधि लेने आत्मारूपी राम विचाररूपी हनुमान को शांतिरूपी सीता का पता लगाने भेजते हैं। सौ योजन के समुद्र को हनुमान पार करते हैं। यह सौ योजन का समुद्र देहाभिमान है। जब देहाभिमानरूपी समुद्र को पार करने विचाररूपी हनुमान बढ़ते हैं, तब • सिंहिका नामक राक्षसी उनकी गति रोकने आ जाती है। यह सिंहिका ही चिज्जड़ ग्रन्थि है। जिसका वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है. निशिचरि एक सिन्धु मँह रहई। करि माया नभु के खग गहई ।

गहड़ छाँह सक सो न उड़ाई। एहि विधि सदा गगनचर खाई।यह सिंहिका छाया पकड़ती थी। पक्षी छाया को पकड़े जाने पर, स्वयं को पकड़ा हुआ जानकर नीचे गिर पड़ते थे और उस राक्षसी का ग्रास बन जाते थे। ठीक इसी तरह जीव भी देह के गुण-दोषों को आत्मा में आरोपित करके स्वयं को ही बंधन में मान लेता है। विचाररूपी हनुमान ने उसका कपट समझ लिया कि मैं आकाश में हूँ, जल से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। अन्तःकरण में जो आत्मा का आभास पड़ता है, उसको चिदाभास कहते हैं। जीव चिदाभास को अपना स्वरूप समझकर अन्तःकरण के चाञ्चल्य को अपना चाञ्चल्य मान लेता है। यहाँ चिदाभास से अपनी असंगता का अनुभव करना ही विवेक है।

वेदांत-सिद्धांत के अनुसार इसी को जड़-चेतन को चिज्जड़-ग्रंथि कहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने ज्ञानदीपक प्रसंग में इसी विषय को इन शब्दों में कहा है जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई।

यह ग्रंथि ही अध्यास है। आत्मा में अनात्मा का स्वरूपाध्यास और अनात्मा में आत्मा का संसर्गाध्यास यही जड़-चेतन की ग्रन्थि है और इससे मुक्त हुए बिना सब साधन निरर्थक हो जाते हैं। हिरण्यकशिपु ने देवताओं के मान से सौ वर्ष तक तपस्या की और ब्रह्मा जी से अमर होने का वरदान माँगते हुए कहा कि आपके द्वारा सृष्ट जीवों से मेरी मृत्यु ना हो, दिन-रात, अन्दर-बाहर, धरती आकाश, अस्त्र-शस्त्रादि से भी मेरी मृत्यु ना हो। इन अभूतपूर्व वरदानों को पाकर भी अन्ततः उसकी मृत्यु हुई क्योंकि वह शरीर को आत्मा मानता था। इसके विपरीत प्रह्लाद जी ने अपने गुरु नारद जी से आत्मा और अनात्मा का विवेक सीख लिया था और मरने वाले शरीर से स्वयं को पृथक् समझते थे, इसलिए असुरों द्वारा प्रह्लाद जी को मारने के सभी उपाय व्यर्थ हुए।

सांसारिक कामनाओं और वासनाओं के लिए जो तप किया जाता है उसे तामसिक तप कहा जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता (17/6) में कहा है

कर्षयन्तः शरीस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तः शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ।

अर्थात् दम्भ और अहङ्कार से परिपूर्ण ऐहिक और पारलौकिक पदार्थों की तीव्र भोगेच्छा से युक्त अविवेकी जो लोग शरीर में स्थित प्राण और इन्द्रियवर्ग को सुखाते हुए और अन्तःकरण में स्थित मुझको भी क्लेश देते हुए अशास्त्रीय घोर तपस्या करते हैं उन्हें तुम आसुर स्वभाव वाला जानो। तपस्या होनी चाहिए मोक्ष के लिए परन्तु ' मैं तपस्या कर रहा हूँ' इस अभिमान को न छोड़ने से सारा तप व्यर्थ हो जाता है।

एक दृष्टान्त है- मथुरा से कुछ लोग नाव में बैठकर यमुना द्वारा प्रयाग जाना चाहते थे। नाव में बैठकर वे रातभर चप्पू चलाते रहे। सुबह उन्होंने नगर के भवनादि देखें तो समझा कि कदाचित् प्रयाग आ गया है। किन्तु थोड़ी देर में उनकी समझ में आ गया कि वह जिस मथुरा में थे वहीं हैं क्योंकि उन्होंने नाव का लंगर खोले बिना ही रात भर परिश्रम किया था। इसी तरह अहंकार का त्याग किए बिना बंधन से मुक्ति का प्रयास परिश्रम मात्र ही है।यही चिजड़ ग्रन्थि है और इसके निर्मोक के लिए विवेक चाहिए। यह विवेक जीवन की दिशा को बदल देता है। किसी युवा संन्यासी से किसी

गृहस्थ व्यक्ति ने पूछा कि 'आप सन्यासी क्यों बन गए?' तब युवा संन्यासी ने पलटकर पूछा कि ' आप गृहस्थ क्यों हो गए ?' गृहस्थ ने कहा कि 'मैंने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं।' तब सन्यासी ने कहा कि 'बस यही अन्तर है कि आपने सोचा नहीं और मैंने सोच लिया।

विवेकी चिन्तन इसी तरह जीवन को बदल देता है। इसीलिए अन्धानुकरण छोड़कर अपने जीवन को विवेकमय बनाकर सार्थक करना चाहिए। गीता के पन्द्रहवें अध्याय में 'संसारवृक्ष को काटने वाला असंग शस्त्र ही विवेक है' यह बताया गया है। इसलिए सत्पुरुषों का संग करके, भगवच्चर्चा में मन को लगाकर विवेकरूपी नेत्र खोलना चाहिए। गुरु वंदना के प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है तेहि करि विमल विवेक विलोचन। बरनउं रामचरित भवमोचन।

मैं (तुलसीदास) अपने विमल, विवेकरूपी नेत्रों से संसार को मुक्त करने वाले रामचरित का वर्णन करता हूँ। बिना विवेक नेत्रों के मनुष्य अन्धा ही है। इस बात को आप इस उदाहरण से समझिए। एक गाँव था। वहाँ के लोग कृष्णपक्ष की हर रात्रि में छाये अंधकार के निवारण के लिए टोकरी में अंधकार को भरकर अंधकूप में डाला करते थे और सभी सुबह होने पर सोचते थे कि हमने अंधेरे को दूर कर दिया है। यह अंधेरी ढोने का क्रम पीढ़ियों से चला आ रहा था। संयोगवश उस ग्राम में अच्छे घर की एक विवेक सम्पन्न लड़की आई और उसने यह सब देखा। जब सभी लोग अंधेरे को ढोने में लगे थे, तब उसने लकड़ी इकट्ठी की और उसमें आग लगा दी। ज्वाला से प्रकाश होते ही अंधकार दूर हो गया. और गाँव के लोगों की समझ में आ गया कि सभी कुछ क्रियासाध्य नहीं है। हमें लौकिक अभ्युदय और नि: श्रेयस के लिए भी विवेक की आवश्यकता है।

इसलिये हमारा आप सबके लिए संदेश है कि अन्धानुकरण छोड़िये और शास्त्र सद्गुरू वाक्यों की सहायता लेकर विवेकवान् बनिये।

।। इति शम् ।।

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

हिन्दी दिवस मनाया

लक्ष्मणगढ़. मोहनीदेवी गोयनका महाविद्यालय में हिन्दी -विभाग की ओर से हिंदी दिवस मनाया गया। वक्ताओं ने हिन्दी के समृद्ध साहित्य व शब्दकोश का उल्लेख करते हुए इसके अधिकाधिक प्रयोग का आह्वान किया। कार्यक्रम को हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ हेमंत पंवार, बीएड कॉलेज प्राचार्य डॉ राकेश कुमार, प्रवक्ता रजनी जोशी आदि ने संबोधित किया। प्रवक्ता गायत्री आर्य ने काव्य पाठ किया।

छात्राओं ने भाषण, गायन, काव्यपाठ की प्रस्तुतियां दी। बगड़िया बाल विद्या निकेतन में हिंदी दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताएं हुई। संस्था सचिव पवन गोयनका ने बताया कि केजी से कक्षा दो के लिए अपना परिचय दीजिए, कक्षा तीसरी से आठवीं के लिए हिंदी भाषा का महत्व पर कविता तथा कक्षा नौवीं से 12वीं के लिए हिंदी भाषा का महत्व पर निबंध प्रतियोगिता हुई। इनमें विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

प्रतीक ने किया नाम को साकार

सीकर. कदमा का बास निवासी प्रतीक गहलोत ने भारतीय प्रशासनिक सेवा 2020 में सफलता प्राप्त की है। प्रतीक ने ऑल इंडिया 651वीं रैंक के साथ सफलता का परचम लहराया है। प्रतीक वर्तमान समय में बागवान जी के जाव विजय विहार कॉलोनी सीकर में रह रहा है।

प्रतीक ने आइआइटी बॉम्बे से सिविल इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर आइओसीएल में फील्ड ऑफिसर की सेवा छोड़कर वर्ष 2017 से भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी शुरू कर दी थी। वर्ष 2018 तथा 2019 की परीक्षाओं में साक्षात्कार तक पहुंचे, पर सफलता नहीं मिली। चौथे प्रयास में वर्ष 2020 की परीक्षा में 651 वीं रैंक के साथ चयनित होकर अपने नाम को साकार किया। प्रतीक के पिता नरसा राम गहलोत जल ग्रहण विकास एवं भू संरक्षण धोद में मंत्रालयिक कैडर में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत है। माता विनोद गहलोत राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल कासली में अध्यापिका के पद पर कार्यरत है।

इस अवसर पर गहलोत परिवार के पैतृक गांव कदमा का बास तथा सीकर निवास पर बधाइयों का तांता लगा हुआ है। विभिन्न विभागों के मंत्रालयिक कर्मचारियों व अधिकारियों के साथ ही शिक्षक वर्ग भी इस उपलब्धि पर गहलोत परिवार को शुभकामनाएं दे रहे हैं

भाजयुमो जिलाध्यक्ष का स्वागत लक्ष्मणगढ़. भाजपा युवा मोर्चा

सीकर के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष स्वदेश शर्मा का शनिवार को प्रथम बार लक्ष्मणगढ़ आगमन पर भाजपाईयों ने घण्टाघर के पास स्वागत किया। भाजपा बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष शशिप्रकाश जोशी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में शर्मा को माला पहनाकर तथा मिठाई खिलाकर अभिनन्दन किया गया। इस मौके पर प्रकोष्ठ के जिला कार्यकारिणी सदस्य पुरूषोत्तम त्रिवेदी, शुभकरण पुजारी, सुशील इंदोरिया, विष्णु भूत, सौरव जोशी, भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के संदीप पंसारी, सुरेश बजाज, अजय जाजोदिया, प्रफुल्ल बजाज, एडवोकेट रामकरण जोशी, एडवोकेट गौरव जोशी, एडवोकेट शोभित जोशी, अनिल जोशी, फूलचंद, बनवारी लाल खींची, दुलीचंद भार्गव आदि उपस्थित थे।

साज-सज्जा पर परिषद ने खर्च किए 01 करोड़

नगरपरिषद सभा भवन में सजा इंगलैंड का मखमली कालीन सीकर. विधानसभा की तर्ज पर बने नगर परिषद के भवन में दो वर्ष के • इंतजार के बाद अब सभा भवन भी बनकर तैयार हो गया है। इंगलैंड के मखमली कालीन से सजे इस सभा भवन की साज-सज्जा पर ही परिषद ने करीब एक करोड़ रुपए की राशि - खर्च की है। परिषद अब इस सभा भवन का स्वायत शासन मंत्री से उद्घाटन करवाना चाहती है। अगले माह सभा भवन के उद्घाटन के बाद ही परिषद की साधारण सभा की बैठक होगी। सभा भवन के उद्घाटन के साथ इसमें विधानसभा की तरह शहर के विकास के लिए नई व्यवस्थाएं करने का भी प्रयास किया जा रहा है।

प्रदेश में अनोखा है सीकर परिषद का सभा भवन प्रदेश की नगर परिषदों की स्थिति] देखे तो सीकर नगर परिषद की ओर

से तैयार करवाया गया सभा भवन प्रदेश में अनोखा है। इस भवन के लिए करीब 20 लाख रुपए की लागत की इंगलेंड से विशेष कालीन मंगवाई गई है। यह कालीन फायर प्रुफ होने के साथ वाटर प्रुफ भी है। इसके अलावा सभा भवन को अन्य व्यवस्थाओं से भी हाइटेक किया गया है।12 करोड़ की लागत से बना है -परिषद का नया भवन

नगर परिषद के 12 करोड़ की लागत से बने नए भवन का उद्घाटन वर्ष 2019 में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने किया था। विधानसभा की तर्ज पर बने इस दो मंजिला भवन में 45 कम

रे हैं। भवन के शुरू होने के बाद परिषद ने यहां पर लगभग सभी कार्य ऑनलाइन शुरू कर दिए। इसके लिए 14 विंडो बनाई गई है। लेकिन उस दौरान सभा भवन का कार्य पूरा नहीं हो पाया। भवन के उद्घाटन के दो वर्ष बाद अब सभा भवन बनकर तैयार हुआ है।

यह है सभा भवन में

17 मीटर लम्बा और 17 मीटर चौड़ा

सभापति के लिए विधानसभा अध्यक्ष की तरह कुर्सी क्षमता- 78

पार्षद दल की बैठक

क्षमता-87

दर्शक दीर्घा की

अधिकारियों के बैठने की क्षमता 10

नगर परिषद का सभा भवन अब बनकर तैयार है। जल्द ही भवन का उद्घाटन करवाया जाएगा। इसके लिए तैयारियां की जा रही है। सभा भवन में हाइटेक तरीके से साज-सज्जा व व्यवस्थाएं की गई है। इसके लिए इंगलैंड से कालीन मंगवाई गई है।

जीवण खां, सभापति, नगर

सिविल सेवा परीक्षा में चमके शेखावाटी के सितारे

सीकर. संघ लोक सेवा आयोग की ओर से सिविल सेवा मुख्य परीक्षा का परिणाम शुक्रवार देर रात जारी हो गया। इसमें शेखावाटी के होनहारों ने सफलता का परचम लहराया है। चूरू निवासी गौरव बुडानिया ने 13 वीं रैंक हासिल की है। जबकि सीकर व झुंझुनूं के कई होनहारों ने भी अच्छी रैंकों के साथ बाजी मारी है। परिणाम की खुशी में जश्न मनाया गया।

सीकर यदि मन में कुछ करने का जूनून हो तो मुसीबत खुद राह से हट जाती है। यह साबित कर दिखाया है पिपराली गांव निवासी विकास अगड़िया ने दसवीं व बारहवीं में फीसदी अंकों के साथ टॉपर रहने वाले बगड़िया का बचपन से ही सपना सिविल सेवाओं में जाने का था। इसके लिए वह तैयारी में जुट गए। कोचिंग की फीस के पैसे नहीं होने की वजह से उन्होंने घर से ही तैयारी शुरू कर दी। दो बार उनका असफलता से भी सामना हुआ। लेकिन उनके अरमान डिगे नहीं। वह पा फिर से और मजबूती से तैयारी में जुट गए।

शुक्रवार को घोषित परिणाम में म उन्होंने 582 वी रैंक हासिल की है। परिणाम की जानकारी मिलने पर नवजीवन साइंस स्कूल से लेकर उनके गांव तक दीवाली जैसा जश्न देखने को मिला। विकास ने बताया कि आईआईटी गुवाहटी से बीटेक की पढ़ाई की। उन्होंने बताया कि हर विद्यार्थी के जीवन में बोर्ड कक्षाएं फाउंडेशन होती है। ऐसे में यहां सिविल सेवा परीक्षा का फाउंडेशन तैयार हुआ इसके बाद मेहनत से इमारत मैंने खड़ी कर दी। उनका कहना है कि कोचिंग नहीं करने का मलाल नही रहे इसलिए पहले से चयनित साथियों से भी गाइडेंस ली। इससे तैयारी में काफी मदद मिली। उन्होंने यूपीएससी परीक्षा में सफलता के लिए आठ से दस घंटे नियमित पढ़ाई की।

परिणाम की खुशी में नवजीवन स्कूल में आतिशबाजी कर जश्न मनाया। संस्था के मानद निदेशक शंकरलाल बगड़िया ने बताया कि इससे पहले संस्थान के छात्र सोहनलाल आईएएस, विक्रम सिहाग आईपीएस, हुक्मीचंद आरएएस और बुद्धाराम आरएएस पद पर चयनित हो चुके है।

चूरू का लाल की देशभर में 13वीं रैंक

1 शेखावाटी के लाल गौरव वृहानिया ने आइएएस की परीक्षा में देश भर में 13 वीं रैंक हासिल की है।

बुडानिया ने ओबीसी वर्ग में दूसरी रैंक हासिल की है। मूलतः झुंझुनू जिले के अलसीसर तहसील के गांव कबीरसर के रहने वाले गौरव का बचपन चूरू में ही बीता है। उनकी आरंभिक शिक्षा आदर्श विद्या मंदिर में हुई, उसके बाद समाजशास्त्र में एमए लोहिया कालेज से की गौरव म ने बताया कि वर्ष 2018 में आरएएस की परीक्षा में उनकी 12 वी रैंक आई थी। उन्होंने बताया कि बीटेक न बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से किया है। पिता रामप्रतापसिंह सीकर में २ अध्यापक हैं व माता संतोषदेवी त गृहिणी, वे दो भाई हैं। गौरव ने अपनी सफलता का श्रेय अपने दिवंगत ताऊजी श्रवण कुमार को दिया। उन्होंने बताया कि जब भी परीक्षा के लिए जाता था, हमेशा ताऊजी मेरे साथ जाते थे। गौरव अपने आदर्श के तौर पर आएएस रामनिवास भुगालिया व नीधि सिहाग को मानते है। बुडानिया ने बताया कि वह सीकर की गुरुकृपा कोचिंग के पूर्व छात्र है। उनका कक्षा बारहवीं के साथ ही जेईई में चयन हो गया था। इस खुशी में संस्थान में आतिशबाजी कर जश्न मनाया गया।

शेखावाटी की बहू दीक्षा की 208 वीं रैंक

फतेहपुर तहसील के गांव कागनसर की बहू दीक्षा तोमर ने आईएएस परीक्षा 2020 के अंतिम परिणाम में 208 वीं रैंक हासिल कर के शेखावाटी का मान बढ़ाया है। दी वर्तमान में असिस्टेंट कमिश्नर दिल्ली पुलिस में कार्यरत है। दीक्षा के पति मुकेश कुमार भी वर्तमान में आयकर विभाग में असिस्टेंट कमिश्नर के पद पर दिल्ली में कार्यरत हैं। दीक्षा ने बताया कि मेहनत के दम पर किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल की जा सकती है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय ससुर परमेश्वर दयाल व माता-पिता को

दिया है।

धोद व लक्ष्मणगढ़ पंचायत समिति की साधारण सभा की मीटिंग आयोजित

बैठक में छाए बिजली- पानी के मुद्दे

लक्ष्मणगढ़, पंचायत समिति की साधारण सभा की बैठक सोमवार को प्रधान मदन सेवदा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में बिजली, पानी व सड़क को लेकर सदस्यों ने सदन को घेरा। सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किए गए।

प्रारंभ में भागीरथ गोदारा ने मीटिंग के प्रस्तावों पर सदस्यों से चर्चा नहीं करने तथा समय पर एजेंडे की प्रति नहीं मिलने का आरोप लगाते हुए नाराजगी व्यक्त की। इस पर प्रधान सेवदा ने विकास अधिकारी भूराराम बलाई को कहा कि आगे से प्रस्तावों में सदन के और पक्ष के सदस्यों की सहमति लें तथा प्रस्तावों की प्रति भी तय समय पर सभी सदस्यों के पास पहुंचाने की व्यवस्था करें। राजेश खाखल ने पालड़ी गांव में बन रहे खेल मैदान में कार्यकारी एजेंसी पर अनियमितता का आरोप लगाते हुए

कार्रवाई की मांग की।

'पीड़ितों की सेवा सबसे बड़ा पुण्य'

रोटरी क्लब व वैश्ये महासम्मेलन की ओर से मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर का आयोजन

शिविर में 800 रोगी लाभान्वित

लक्ष्मणगढ़. रोटरी क्लब सीकर व अन्तरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन लक्ष्मणगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को नथमल जाजोदिया की स्मृति में महावीर जांगिड़ भवन में मल्टीस्पेशलिटी चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर का करीब 800

रोगियों ने उठाया। शिविर के उद्घाटन समारोह में सांसद सुमेधानंद सरस्वती ने कहा कि पीड़ितों की सेवा से बड़ा पुण्य का कोई काम नहीं है। शिविर की अध्यक्षता रोटरी क्लब अध्यक्ष डॉ

दिव्या कचोलिया ने की। कार्यक्रम में क्लब के निर्वाचित प्रांतपाल बलवंतसिंह चिराना, सहायक प्रांतपाल जगदीश प्रसाद कुमावत, संयोजक डॉ दीपक गर्ग, सह संयोजक दिनेश बियाणी,

माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष डॉ प्रकाश मूंदडा, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष सुरेश मोदी, प्रमोद काछवाल, उप जिला अस्पताल प्रभारी डॉ राजीव ढाका, वरिष्ठ पार्षद पवन बूटोलिया, रेखा शर्मा, भाजयुमो जिलाध्यक्ष स्वदेश शर्मा तथा भाजपा बलारां। मंडल अध्यक्ष अमित शर्मा बतौर अतिथि मंचस्थ थे। शिविर को डॉ जीएल राठी, वैश्य महासम्मेलन के जिलाध्यक्ष पवन मोदी, पंचायत समिति सदस्य भागीरथ गोदारा, भाजपा नेता दिनेश जोशी, सीए सुनील मोर तथा महासम्मेलन के प्रदेश मंत्री विष्णु भूत ने भी सम्बोधित किया। संगठन के स्थानीय अध्यक्ष संदीप बजाज ने बताया कि महासम्मेलन के प्रदेश मंत्री विष्णु भूत की प्रेरणा से लगाया गया। संचालन अमरसिंह कविया ने किया।

स्वच्छता प्रहरियों का सम्मान

लक्ष्मणगढ़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस पर सेवा सप्ताह के तहत भाजपा ओबीसी मोर्चा ने स्वच्छता प्रहरियों का सम्मान किया। संस्कार मैरिज गार्डन में ओबीसी मोर्चा के जिला मंत्री संपत चेजरा की अगुवाई में पालिका के सफाईकर्मियों को साफा, माला व शॉल भेंटकर सम्मानित किया। इस दौरान मोर्चा जिलाध्यक्ष राजेश सिंह, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष स्वदेश शर्मा, मनोज बाटड़, जयप्रकाश सरावगी, अशोक पुजारी, आलोक पाराशर, हरिराम प्रजापत, सुभाष चंदेल, मनोज पड़िहार, आदि मौजूद थे।

लक्ष्मणगढ़ के वोटों की आवाज गूंजती है।

लक्ष्मणगढ़. शिक्षा राज्य मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा है कि राजस्थान में जहां भी जाता हूं वहां मेरी नहीं बल्कि लक्ष्मणगढ़ के वोटों की आवाज गूंजती है। वे शनिवार को पालडी गांव में विभिन्न विकास कार्यों के शिलान्यास व लोकार्पण के बाद ग्रामीणों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि लक्ष्मणगढ़ आज विकास के मामले में पूरे राजस्थान में अव्वल है। डोटासरा ने प्रदेश सरकार के कार्यकाल को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि कोरोनाकाल में विपरीत परिस्थितियों के बावजूद राज्य सरकार ने बेहतरीन काम किया है। कार्यक्रम को जिले के प्रभारी मंत्री सुभाष गर्ग, सरपंच पवन गोवला तथा नंदलाल गोवला ने भी संबोधित किया।

शक्तितत्त्व

(पूज्यपाद श्रीउड़ियाबाबाजीके विचार)

जो निर्विशेष शुद्ध तत्त्व सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका आधार है उसीको पुंस्त्वदृष्टिसे 'चित्' और स्त्रीत्वदृष्टि से 'चिति' कहते हैं। शुद्ध चेतन और शुद्ध चिति- ये एक ही तत्त्वके दो नाम हैं। मायामें प्रतिबिम्बित उसी तत्त्वकी जब पुरुषरूपसे उपासना की जाती है तब उसे ईश्वर, शिव अथवा भगवान् आदि नामोंसे पुकारते हैं, और जब स्त्रीरूपसे उसकी उपासना करते हैं तो उसीको ईश्वरी, दुर्गा अथवा भगवती कहते हैं। इस प्रकार शिव-गौरी, कृष्ण-राधा, राम-सीता तथा विष्णु और महालक्ष्मी- ये परस्पर अभिन्न ही हैं। इनमें वस्तुतः कुछ भी भेद नहीं है, केवल उपासकोंके दृष्टि भेदसे ही इनके नाम और रूपोंमें भेद माना जाता है।

शक्तिकी उपासना प्रायः सिद्धियोंकी प्राप्तिके लिये की जाती है। तन्त्रशास्त्रका मुख्य उद्देश्य सिद्धि लाभ ही है। आसुरी प्रकृतिके पुरुष उसे मद्य-मांस आदिसे पूजते हैं, जिससे उन्हें मारण-उच्चाटन आदि आसुरी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं; तथा दैवी प्रकृतिके पुरुष गन्ध-पुष्प

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुःसायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

आदि सात्त्विक पदार्थोंसे, जिससे वे नाना प्रकारकी दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार यद्यपि शक्तिके उपासक प्रायः सकाम पुरुष ही होते हैं, तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि उसके निष्काम उपासक होते ही नहीं। परमहंस रामकृष्ण ऐसे ही निष्काम उपासक थे। ऐसे उपासक तो सब प्रकारकी सिद्धियोंको ठुकराकर उसी परम पदको प्राप्त होते हैं जो परमहंसोंका गन्तव्य स्थान है। और यही शक्त्युपासनाका चरम फल है। दुर्गासप्तशती में जिस प्रकार देवीको 'स्वर्गप्रदा' बतलाया है उसी प्रकार उसे 'अपवर्गदा' भी कहा है। यथा

स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

प्रायः सवा सौ वर्ष हुए जगन्नाथपुरीके पास एक जमींदार थे। लोग उन्हें 'कर्ताजी' कहकर पुकारा करते थे। उन्होंने एक पण्डितजीसे वैष्णवधर्मकी दीक्षा ली। पण्डितजी ऊपरसे तो वैष्णव बने हुए थे, परन्तु वास्तवमें श्यामा (काली) - के उपासक थे। वस्तुतः उनकी दृष्टिमें श्याम और श्यामामें कोई भेद नहीं था।

इधर कुछ लोगोंने कर्ताजीसे उनकी शिकायत करनी आरम्भ कर दी। परन्तु कर्ताजीको अपने गुरुजी | इस विषयमें कोई प्रश्न करनेका साहस नहीं हुआ। उस | देशके लोग अपने गुरुका बहुत अधिक गौरव मानते हैं। पण्डितजी रात्रिके समय काली माँकी उपासना किया करते थे। अतः कुछ लोगोंने कर्ताजीको निश्चय करानेके लिये उन्हें समय पण्डितजी पूजामें बैठते थे-ले जानेका आयोजन किया। एक दिन जिस समय पण्डितजी माताकी पूजा कर रहे थे वे अकस्मात् कर्ताजीको लेकर आ धमके। कर्ताजीको आये देख पण्डितजी कुछ सहमे और उन्होंने जगदम्बासे प्रार्थना की कि 'माँ! यदि तेरे चरणोंमें मेरा अनन्य प्रेम है तो तू श्यामासे श्याम हो जा।' पण्डितजीकी प्रार्थनासे वह मूर्ति कर्ताजीके सहित अन्य सब दर्शकोंको श्रीकृष्णरूप ही दिखलायी दी। इस प्रकार अपने भक्तकी प्रार्थना स्वीकारकर भगवतीने भगवान्के साथ अपना अभेद सिद्ध कर दिया।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी